Vol II Issue XI Dec 2012 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.11,Dec. 2012
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net
ORIGINAL ARTICLE

संत कबीर और तुकाराम जी के विचारों में प्रासंगिकता

शे. रज़िया शहनाज़ शे. अब्दुल्ला(हिन्दी विभाग)

हु. बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, वसमतनगर

प्रस्तावना :–

संत कबीर और संत तुकाराम को व्यतीत हुए आज कई सदीयाँ बीत गई, लेकिन उनके विचार आज भी हमें उतने ही प्रासंगिक एवं समर्पक लगते हैं, जितने की उस समय में लगते थें। तत्कालीन परिस्थितियों में कबीरदास और तुकाराम ने जों अपने विचार अभिव्यक्त किये हैं वह आज भी बिलकुल सही और संगत लगते हैं। इसी कारण यह दोनों भी कालजयी युग पुरुष हैं।

प्रासंगिकता का अर्थ है "वर्तमान समय की उपादेयता" और हम यह कह सकते है कि आज भी, और भविष्य में भी कबीर और तुकाराम के विचार उपादेय रहेंगे, क्यों कि उस काल की तरह आज भी जातिवाद, साम्प्रदायिकता जोरों पर हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि राष्ट्र को अखण्ड बनाए रखना है तो कबीर और तुकाराम को याद करना अवश्यक हैं। वास्तविक सत्य तो यह हैं कि कबीर और तुकाराम ज्यों–ज्यों पुराने होते जा रह है त्यों–त्यों उनकी प्रासंगिकता बढ़ती जा रही हैं। आदर्श समाज की स्थापना करना जितना मध्य युग में अवश्यक था उतना ही आज भी अवश्यक हैं। और यह कार्य हम कबीर और तुकाराम के विचारों से ही संभव कर सकते हैं। कबीर के कवित्व और तुकाराम के अभंग पढ़ते समय हमें कुछ ना कुछ सिख अवश्य मिलती हैं। – जैसे के कबीर अपनी वाणी से समाज को सत्य और ज्ञान पर बल देते हैं तो तुकाराम मानवीय स्वभाव की विविध प्रकृतियाँ, मनुष्य का नैतिक व्यवहार पर जो आज भी हमारे लिए आदर्श का द्योतक हैं। उनके अभंग पढ़ते समय लगता है कि उनके अभंगों को काल तत्व का स्पर्श हुआ हैं। चार शताब्दियों के गुजर जाने के बाद आज भी उनके विचारों में सतेजता, ताजापन थोडा भी कम नही हुआ हैं। कबीर और तुकाराम जैसे आज भी स्पष्टता से बोलनेवाले, निस्वार्थ तत्वेता एवं समयानुसार अपने कटू शब्दों से समाज को सुधारनेवाले सुधारक की अवश्यकता है। जो यह बताए की आँख मुंद कर बिना सोंचे समझे किस पर विश्वास न करना, सभी लोग जो केवल सुख के साथी हैं तथा दुनिया में उसीका मान है जिसके पास धन हैं। ऐसे विचार सदैव प्रासंगिक लगते है। जैसे के कबीर का यह दोहा दृष्टव्य हैं। जहाँ कबीर ने साम्प्रदायिकता को मिटाने का प्रयास किया, –

"हिंदू तुरुक कहाँ ते आए? किन यह राह चलाई,
दिल माहि खोजि देखि खोजा दे, भिस्ति कहाँ ते आई।" (1)

साम्प्रदायिकता मानव निर्मित हैं इसलिए इसका समूल निर्मूलन करने का आग्रह करते हुए कबीर सत्य को पहचानने के लिए प्रेरित करते है। वे साफ–साफ कहते हैं कि हिन्दू और तुर्क कहाँ से आ गए, ईश्वर ने तो 'मनुष्य' पैदा किया था। ईश्वर का निवास मनुष्य के दिल में होता हैं और उसे प्राप्त करने के लिए दूर जाने की अवश्यकता नही हैं। हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल देते हुए वे एक ऐसा आमूल परिवर्तन चाहते थे। इस दृष्टि से वह कहते हैं, –

"काबा फिरी कासी भया राम हि भया रहीम।
मोट चून मैदा भया बैठि कबीरा जीम।" (2)

साम्प्रदायिक एकता की कोशिश करनेवाले कबीर ने स्पष्ट कहाँ है कि भ्रमवश मनुष्य राम–रहीम में भेद मानता है, वास्तव में राम–रहीम अलग अलग नही है, दोनो एक ही है– जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू। मगर भ्रमवश दोनो को अलग–अलग मानक हिन्दू–मुसलमान आपस में लड़ते–झगड़ते हैं। कबीर के विचारों को साम्यता प्रदान करने वाले तुकाराम के अभंगो में भी यही विचार देखने को मिलते है, –

"विष्णुमय जग वैष्णवांचा धर्म।
भेदोभेदी भ्रम अमंगला।" (3)

तुकाराम ने भी जातिय श्रेष्ठत्व के घमंड और जातिवादी मानसिकता का विरोध किया है तथा उसे मानक कृत और कृत्रिम बताकर उसकी व्यर्थता स्पष्ट की हैं। इसलिए तुकाराम कहते हैं, –

"हरिहरा भेद। नाही करु नये वाद।
एक एकाचे हृदयी। गोडी साखरेच्या ठायी।" (4)

Title: *संत कबीर और तुकाराम जी के विचारों में प्रासंगिकता* **Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850]** शे. रज़िया शहनाज़ शे. अब्दुल्ला **yr:2012 vol:2 iss:11**

तो कबीर भी अपने विचार कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं, –

"भाई रे। दुई जगदीश कहाँ तैं आय, कहु कव ने भरमाया
अल्लाह–राम, करीमा–केशव, हरि–हज़रत नाम धराया" (5)

कबीर का मानना हैं कि सर्व व्यापक महान शक्ति को खुदा कहो या राम कहों, शिव कहो या अल्ला एक ही बात है। उस महान शक्ति का वर्णन चाहे कुरान में हो या पुराण में हो सब एक ही हैं।

कबीर और तुकाराम समाज को जोडनेवाले कवि होने के कारण दोनो एकता के झंडे को लेकर आगे बढ़ते रहे हैं। राम–रहीम के नाम पर एक–दुसरे का खून बहानेवाले लोगों के मन में आपसी प्रेम–भाईचारा और विश्वास जगाने का कार्य संतों ने किया है। मध्ययुगीन संतो ने राम–रहीम की एकता घोषित कर साम्प्रदायिक, सौहार्द, सद्भाव स्थापित करने का ऐतिहासिक कार्य किया और भ्रष्टाचार, कर्मकांड और कुप्रथा–परम्परा के विरोधी कबीर और तुकाराम दिखावे और पाखंड से नफरत करते हैं।

जातिवादी व्यवस्था का कड़ा विरोध करते हुवे उसे अमानवीय कह कर उसके विरुध्द आक्रोश व्यक्त करनेवाले कबीर दलित चेतना के अग्रदूत माने जाते है। उन्होने प्रचलित समाज व्यवस्था को खुली चुनौती दी थी। सामाजिक व्यवस्था को पृष्ट करनेवाले उच्च वर्ग की भर्त्सना करते हुए कबीर ने पंडित, मुल्ला, पंडे, पुरोहित, मुजावर के मिथ्या कर्मकांड और भ्रष्टाचार का खुला विरोध किया। उन्होने उच्च जाति और धनीक वर्ग के लोंगो को समझाते हुए कहा था कि एक दिन यही शोषित उपेक्षित जन जागेंगे और संगठित होंगे और अपना हक मांगेगे, उन्हे कमजोर नही समझना चाहीए। इस दृष्टि से वह एक जगह कहते है,–

"कबीर घास न चींदिये जो पाऊँ ताति होई।
उड़ि पड़ै जब आँखि में खरा दुहेली होई।" (6)

जैसे के घास के तिनके को बेकार अनावश्यक समझकर फसलों में से उखाड़ कर फेक दिया जाता हैं। पर यही मामुली घास का तिनका आँख में पड़ जाए तो बहुत तकीलफ देता हैं। इसलिए दलित, शोषित, पीड़ितों वर्ग को तुच्छ या निम्न या उपेक्षित नही समझना चाहिए अगर वह संघठित हो जाए तों दुनिया की काया पलट सकते है। कबीर को सर्वहारा वर्ग के प्रति गहरी संवेदना और सहानुभूति थी। समाज कल्याण उनके जीवन का लक्ष्य था। दलित चेतना के अग्रदूत कबीर ने दलितों, शोषित, पीडित, दमितो एवं उपेक्षित जनता के लिए सहज रास्ता दिखाया जिसे अनपढ़, गंवार, मोची, धोबी, नाई, कुभांर सब समझ सकते थें। जिसके कारण यह सभी उनके संगी और साथी बन गए थे क्योकि कबीर उनके अग्रदूत थे। वे अपने आपको पेशे से जुलाह बताकर अपने आत्म गौरव की बात करते है। जिसमें यहा उनकी लाचारी व्यक्त न होकर गौरव दिखाई देता हैं, जहाँ वे कहते हैं,–

"तू ब्राह्मन मैं कासी का जुलाहा बूहदू मोर गिआना।
.....
ओछी मति मेरी जाति जुलाहा।" (7)

यहाँ कबीर अपने जुलाहा होने की बात को स्वीकार कर उसे अभिमान की बात बताते हैं। तो वही तुकाराम भी अपने आपको भाग्यशाली मानते हुए कहते है, – जाति, ज्ञान, विद्या की उच्चता का घमंड करनेवाले, अपने बड़प्पन के झूठ उन्माद में नरक के मार्ग पर चलते है। वे कहते है ,–

"बरा कुणबी केलों। नाही तरि दंभोचि असतो मेलों।
भले केले देवराया। नाचे तुका लागे पाया।
विद्या असती कांही। तरी पड्यो अपायी।
गर्व होता ताठा। जातो यमपंथे वाटा।
तुका म्हणे थोरपणे। नरक होती अभिमाने।।" 320 (8)

तुकाराम का मानना है कि उच्चकुलीन अपनी जाति की उच्चता एवं विद्या के गर्व से दूषित होते हैं। उनकी अपेक्षा साधारण जाति का मनुष्य जो भगवान का सीधा–सादा भक्त हो जाता हैं, वही अच्छा होता हैं।

कबीर और तुकाराम के कर्मकांड संबंधी विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। कबीर धर्म के नाम पर चलनेवाले कर्मकांड का विरोध करते मूर्तिपूजा का विरोध किया और कहा की सभी मूर्तियाँ निर्जीव हैं, वे बोल नही सकती। वैसे कबीर ज्ञानमार्गी, निर्गुणोपासक संत थे तथा उन्होने देखा की मूर्तिपूजा से समाज में कर्मकांड बढ़ रहा हैं, इसलिए उन्होने कहाँ हैं,–

"पत्थर पूजे हरि मिलै, तौ मैं पूजौं पहार।
तातेये चक्की भली, पिसि खाय संसार।" (9)

कबीर ने मूर्तिपूजा पर विचार प्रकट करते हुए कहाँ है, वह मनुष्य मुर्ख और पागल मनुष्य ही होगा जो मनुष्य की सेवा न करके पाषाणों से निर्मित मूर्ति की पूजा करता हैं। जहाँ अगर पत्थर पूजने से ही हरि मिल जाते तो वे तो पूरा पहाड़ ही पूजना चाहते हैं। यह सब मुर्खता और पागलपन की निशानियाँ हैं। यह सब करना व्यर्थ हैं। साथ ही अहंकार को त्यागने की बात कर कबीर कहतें हैं, के बल, वैभव, बुध्दी, विद्या, प्रतिष्ठा, सफलता आदि की थोडी सी भी उपलब्धी पर साधारण मनुष्य अहंकार से भर जाता हैं, उसकी स्थिति भयावह होती हैं। जिससे अमानवीय तत्वों की वृध्दी होती हैं। उनका मानना हैं के मनुष्य को अपने शरीर पर गर्व करना व्यर्थ हैं, वह एक सर्प के केंचूल की तरह हैं जो पीछे छूट जायेगा तथा एक कच्चे घड़े की तरह हैं जो कभी भी फुट जायेंगा। इस दृष्टि से कबीर कहते हैं, –

"यह तन काचा कुंभ हैं लिया फिरै था हाथि।
ठबका लगा फूटि गया कछू न आया हाथि।" (10)

ठिक उसी तरह तुकाराम मूर्तिपूजा का विरोध करते जैसे कबीर करते हैं, तुकाराम कहते है,– जो मन में किसी वस्तू का लोभ रखकर भगवान की मूर्ति की पूजा करता हैं, वह तो एक पत्थर के आगे बैठा दूसरा पत्थर हैं। इस दृष्टि से तुकाराम कहतें हैं,–

"देव पूजेवरी ठेवू नियमन। पाषाण पाषाण पूजी लोभे।" (11)

इस अभंग के माध्यम से तुकाराम जन साधरण को समझाते हुए कहते हैं मूर्ति की पूजा में कुछ भी धरा नही हैं। मन स्वच्छ होना चाहीए जिस में भगवान वास करता हों। तुकाराम जप–तप का विरोध, मूंढन करना, बहु देववाद, दिखावा पाखंड पर, मन की शुध्दता पर, तथा तीर्थ स्थान का भी विरोध करते नज़र आते हैं।

कबीर और तुकाराम दोनों का रचनाकाल, मुस्लिम शासनकाल अर्थात विदेशी आक्रमणकारी, अत्याचारी शासकों का काल रहा हैं। तुकाराम के अंतिम काल में महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज ने स्वराज्य की भूमि बनाने का अनूठा कार्य किया तो वही तुकाराम, रामदास, आदि संतो ने भी किया हैं। कबीर और तुकाराम यह दोनो कालजयी कवि, युगचेता कवि, समाज सुधारक संत, लोकनायक, लोक कवि, भक्त शिरोमणि, संत शिरोमणि, निर्भिक साहित्यकार, विद्रोही संत, विद्रोही कवि व समाज सुधारक, आत्मविश्वासु, अक्खड और फक्कड़, मस्तमौला, सात्विक, विनयशील, महानत्म, जन साहीत्यकार, वंदनीय साधक, तेजस्वी व्यक्तित्व, समाजद्रष्टा, जननायक कवि रहे हैं, जिनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। जिन्होने सामान्य जन को पथ–प्रदर्शन करने का मौलिक एवं महत्वपूर्ण काम किया है। दोनो ने अपने साहित्य में प्रगतिशील चेतना के ऐसे बीज बोए हैं, जिस पर आज हिन्दी और मराठी साहित्य की प्रगतिशील चेतना की इमारत खड़ी है। जो कल भी प्रासंगिक थी, आज भी प्रासंगिक हैं और कल भी भविश्य में प्रासंगिक रहेंगी।

संदर्भ–सूची :

1. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 93)
2. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 94)
3. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 196)
4. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 197)
5. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 197)
6. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 83)
7. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 83)
8. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 156)
9. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 107)
10. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 99)
11. कबीर और तुकाराम के सामाजिक विचार – डॉ रघुनाथ देसाई (पृ.क्र. 187)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net